हाथीक दाँत

[यथार्थवादी सामाजिक एकांकी]

लेखक
प्रोफेसर प्रबोध नारायण सिंह
कलकत्ता विश्वविद्यालय,
कलकत्ता

प्रकाशक
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड
१४ बी, ब्रजनाथ मित्तर लेन,
कलकत्ता-६

मूल्य ५० पैसे

हाथीक दाँत

स्थान—महिलाश्रम क सभा-स्थान
समय—सायंकाल साढ़े चारि बजे।

[एक दिसि पुरुष-वर्ग। दोसर दिसि नारी-वर्ग। पाछाँ मे एक कुर्सी। स्थानीय नेता फूलक माला सँ लदल, खजवा टोपी पहिरने उत्तेजित स्वर मे भाषण द' रहल छथि। जनता "जय मैथिली! जय मिथिला!!" और "नेताजी क जय! नेताजी क जय!!" गर्जन कए उत्तेजित हैबाक परिचय द' रहल अछि। जय-ध्वनिक कारणें भाषण सुनल नहि जा सकैत अछि। बीच-बीच मे थपड़ीक गड़गड़ाहटि सँ कोलाहल और बढ़ि जाइत छैक। पुनः नेताजीक स्वर स्पष्ट रूपमे सुनल जाइछ।]

नेताजी—आसानी सँ कोनो काज नहि होइत छैक। महिलाश्रमक आगाँवाला जमीन लेबा लेल जे हम आमरण अनशन कएलहुँ ताहि मे पचीसे दिनक बाद सेठ करोड़ीमल कें झुकय पड़लन्हि। सत्यक सदा जीत होइत छैक। हमर समाज सत्यहि पर टिकल अछि। तैं हम कहैत छी जे हमरा लोकनिक जीवन मे मिथ्या कथमपि नहि आबय। आडम्बर एवं छल प्रपंच सँ सौ योजन दूर रहबाक चाही। देखु ने, आजकल सर्वत्र सिफारिश और घूसखोरीक बाजार गर्म अछि। परमिट और कोटाक खुलेआम बिक्री होइत अछि। छोट सँ पैघ सब अफसर घूस लैत छथि। ढोंगी नेते, सबकें देखियन्हु ने, जनता सँ चन्दा वसूलैत छथि और चन्दाक टाका कतय बिला जाइत छैक से भगवानहि जानथि। कालाबाजारीक पाइ सँ व्यवसायी लोकनिक धोधि दिनोंदिन नमड़ले जाइत छन्हि। और गरीब तथा मजदूर लोकनिक ऊपर अत्याचार सेहो

बढ़ले जाइत छैक। [उच्च स्वर मे अधिक आवेशक साथ] एहि बेइमान एवं प्रपंची सभक दलकें दाबय पड़त। बाजू, अत्याचारी सभक नाश हो।

जनता—अत्याचारी सभक नाश हो ! नाश हो !!

नेता—घूसखोरीक नाश हो !

जनता—घूसखोरीक नाश हो ! नाश हो !!

नेता—ढोंगी सभक नाश हो !

जनता—ढोंगी सभक नाश हो !

[नाराक शोरगुल कें शान्त करैत नेता जी पुनः बजैत छथि।]

नेताजी—भाइ लोकनि, आब जागि जाउ। स्वार्थे-त्यागी तथा इमानदार नेता लोकनि कें चिन्हू, अन्यथा कल्याण नहि। अपन परिश्रम सँ उपार्जन करनिहार नेते लोकनि टा सुच्चा भ' सकैत छथि। आन सब नेता लुच्चा।

दू चारि आदमी—नेताजी सुच्चा, आन सब लुच्चा;
नेताजी सुच्चा, आन सब लुच्चा !

नेताजी—शान्त ! शान्त !! भाइ लोकनि, हमर समाजक मूल आधार थिक ब्रह्मचर्य, सतीत्व। जाहि समाज मे नारीक पूजा नहि होइछ से समाज शीघ्रहि रसातल पहुँच जाइत अछि। तैं भूलल-भटकल नारी लोकनिक रक्षार्थ ई महिलाश्रम खोलल गेल अछि। [बिजली देवीक दिसि हाथ सँ इंगित करैत] परम त्यागमयी बिजली देवीक सुप्रबन्ध सं आश्रमक दिनोदिन उन्नति भ' रहल अछि। संयम, सदाचार एवं आत्म-गौरवक पाठ पढ़ि आश्रमक कन्या लोकनि मिथिलाक उद्धार करतीह। तैं अपने लोकनि सँ ई अनुरोध जे आश्रम कें मुक्त हस्त सँ दान देल जाउ। एहि सँ माइ-बेटीक रक्षा, समाजक रक्षा, देशक रक्षा...सब किछु हैत। हम बिजली देवीक संग मुख्य द्वार पर भिक्षा लेल ठाढ़ छी। अपने सभक जे श्रद्धा......

[थपड़ीक गड़गड़ाहट। मुख्य द्वार पर चादरिक दू खूंट नेताजी और दू खूंट बिजली देवी पकड़ने ठाढ़ छथि ! लोग चादरि मे टाका पैसा फेकैत एक-एक कए जाइत छथि। टाकाक ढेरी लागि जाइत अछि।

दोसर दृश्य

स्थान—महिलाश्रमक कार्यालय ।

समय—सायंकाल ।

[नेताजी कुर्सीपर बैसल छथि । बगलक कुर्सीपर बिजली देवी विराजमान छथि । तावत् सुमित्रा प्रवेश करैत अछि ।]

नेताजी—सुमित्रा, बेटी, हे ई घर ल' जा । संभारि कए राखिह । एही लेल बजबौने छलियहु ।

बिजली—किन्तु, नेताजी, आ·········हमर कमीशन ?

नेताजी—(कनेक रुक्ष भए) अहूँ बुड़िबके रहि गेलहुँ पार्टनर ।

बिजली—टाका चलि गेने हमर बुधियारिये कोन काज देत ?

सुमित्रा—लेकिन, ई तँ आश्रमक लेल उगाहल चन्दा थीक । ई कोना··············· ?

नेताजी—फेर वैह हुज्जत । तोरा ताहि सँ की ? हम चोरी करि कए लाबैत छी वा डकैती करि कए लाबैत छी, ताहि सँ तोरा कोन मतलब ?

सुमित्रा—आब हम नमहर भेलहुं, पढ़लहुं-लिखलहुं । एहि पाप-कर्म मे हम अपनेक भागी नहि भ' सकैत छी । लियह·········अपन संभारू (थैली राखि दैछ)।

नेताजी—ईह ! अभागलि कहाँ के नहितन ! चलली हें हमरा धर्म सिखाबय ! तँ, जा । पेट मे नूर दए सूति रहिह ।

सुमित्रा—से उपास करब नीक, माहुर खा कए मरि जाएब नीक, किन्तु············ ।

नेताजी—किन्तु-परन्तु किछु नहि । पढ़ने-लिखने आ बढ़ि कए धड़िंग भ' गेने की हैतह ? अरे, अपना देश मे समाज-सेवक वा नेता

लोकनि कें कि क्यो कतहु सँ दरमाहा दैत छन्हि ? ओ तिकड़म नहि करताह तँ खेताह की ?

सुमित्रा—अहीं राखू अपन समाज-सेवा। हम जाइत छी।

नेताजी—आखिर; तोहर बियाह-व्यवस्था लेल तँ सोचय पड़त। तोहर माय नहि रहलहु तैं सँ की ? हमरा तँ तोहर सुखक लेल......।

सुमित्रा—हमरा लेल पाप करबाक अपने कें कोनो जरूरत नहि। हम अपन व्यवस्था अपनहि क' लेब। हमर आ अपन भला चाही तँ जे सब क' रहल छी से अविलम्ब रोकू।

नेताजी—तोरा कहने हम रोकि देब ?

सुमित्रा—हँ, हमरे कहने रोकय पड़त।

नेताजी—ऐं! (हाथ मे डंटा लए खूँखार जकाँ तकैत) बड़ साहस भ' रहल छौक!

सुमित्रा—हँ, हमरा कोनो डर नहि।

नेताजी—(अकड़ि कए) हम नहि रोकब। जे मन दैत से करब तों की करबें ?

सुमित्रा—तँ हम अखबार मे छपा देब, पुलिस मे खबर दए देब।

नेताजी—ऐं! अच्छा तँ दे खबर (डंटा उठबैत छथि।)

बिजली—(हाथ पकड़ैत) ई की करैत छी ?

(नेताजी मुड़ी खसौने ठाढ़ भए जाइत छथि आ सुमित्रा आवेश मे बहरा जाइत अछि।)

नेताजी—नव बयस छैक। किछु कष्ट सहने आदर्शवादिता अपनहि घुमड़ि जेतैक।

बिजली—आ हमर कमीशन ?

नेताजी—हें-हें, हें-हें। अच्छा, तँ लियह। (एकटा दसटकही निकालि कए हाथ बढ़बैत छथि)।

बिजली—(बिजली हाथ ठेल दैत छन्हि आ' गट्टा पकड़ि कए क्रुद्ध भए पुछैत छन्हि) कमीशन देब कि नहि ?

नेताजी—अरे, अहाँ केँ तँ कमीशन मे हम आत्म-समर्पणहि क' देलहुं अछि। तखन बाँट की और बखरा की ?

(कहैत-कहैत बिजली क कान्ह पर प्रेम सँ हाथ राखि अपना दिसि खिचबाक प्रयास करैत छथि। बिजली धक्का दैत छन्हि।)

बिजली—हम कैक बेर कहि चुकल छी जे अपनेक ई चोकटल गाल, धँसल आँखि आ अधपक्कू केसवला मुह सँ हम कहियो प्रेम नहि क' सकैत छी।

नेताजी—अरे, मुह दिस की, दिल दिसि ने देखू। हे लियह, कतेक टाका लेब ?

(एक बाकुट टाका दैत छथि आ बिजली देवी हाथ मे टाका लैत गद्गद भए हुनका सँ लपटि जाइत छन्हि।)

बिजली—अपने बड़ नीक लोग छी !

नेताजी—किन्तु अहाँ सं बेसी नहि। अनशन कालक कएल अहाँक उपकार हम जीवन भरि नहि भूलब। सब राति नुका-नुका कए, सेवा करबाक बहाना सँ कोना अहाँ हमरा अंडा, किशमिश, बदाम आ बर्फी खुआ-खुआ जीवित राखलहुं ! से कि कहियो भुलल जा सकैछ ? ...ऐं ! अहाँ एतेक उदास कियैक छी ?

बिजली—की कहू ? हमरा रोहिणीक चिन्ता सता रहल अछि। ओकर दिन-राति कानब हमरा बुते नहि सहल जाइछ। बेचारी !

नेताजी—धुर, औषधि कहि कए किछु पुड़िया खुआ दियौक ने।

बिजली—ताहि सं तँ सब भण्डाफोड़े भ' जाएत।

नेताजी—अहाँ छोड़ू रोहिणी - मोहिनीक चिन्ता। एहन-एहन लड़की केँ तँ............।

(हठात् दरवाजा पर खट-खट, खट-खट आवाज होइत अछि। "की हम आबि सकैत छी" ? ई आवाज सुनल जाइछ।)

नेताजी—आएल जाउ, आएल जाउ।

(एक हताश आकृतिवला, किन्तु शिक्षित सन युवकक प्रवेश

युवक—नमस्कार नेताजी।

नेताजी—(रुक्ष स्वर मे) नमस्कार! कोन एहन आवश्यक काज अछि?

युवक—हम बी० ए० पास करियो कए बेकार छी। अपनेक यश सुनि एतय आएल छी।

नेताजी—हम की कोनो एम्प्लायमेन्ट एक्सचेंज खोलने छी?

युवक—सुनल अछि जे अपनेक पहुंच बड़-बड़ अफसर लग अछि।

नेताजी—ताहि सँ अहाँ कें कोन लाभ? एहि भ्रष्टाचारी अफसर सभक संग परिचय रहनहि की वा नहियें रहने की?

युवक—तइयो।

नेताजी—तइयो की? अरे, अफसर सब तँ घूसक बिना कोनो बाते नहि करत। आजकल तँ बुझू जे नोकरिये टा नहि, परमिट, लाइसेन्स, पुरस्कार एवं न्यायो धरि सरे आम बेचल जाइत अछि।

युवक—तखन हमरा लोकनिक गुजर कोना.........?

नेताजी—तखन अपने लोकनि एक-एक चुरू पानि लियह और सुरकि-सुरकि कए मरि जाउ। और की करब? औ जी, बी० ए० पास सब तँ देखैत छियैक जे अल्हुओ सोहबा जोकरक नहि बुझल जाइत छथि। तखन अहाँ नोकरी कतय सँ पायब? हं, घूसक पाइ हो तँ अलबत्त अफसर वा मिनिस्टरो सभक पास धरि जा सकैत छी।

युवक—हमरा सँ तँ सेहो देब नहि पार लागत।

नेताजी—कहलहुँ तं जे अहाँ लोकनि कोनो जोकरक नहि होइत छी। खैर, अहाँक विपन्न अवस्था देखि हमरा दया भ' रहल अछि। हम पहिनहुं कहने छलहुं जे जौं अहाँ घूसक लेल थैलीक इन्तजाम कए सकी तँ हम एक टा सेवा-कार्य बुझि पैरवी क' देब।

युवक—तत्काल सौ टाका देने काज चलय तँ ई लेल जाउ। (निकालि कए देत छैक) आ' और हम नौकरी पौने, बाद मे सधा देब।

नेताजी—खैर, ई तँ हम राखि लैत छी। थोड़-बहुत और जे लागत से हम अपने सँ ल' लेब। (टाका जेबी मे राखि लैत छथि।)

युवक—कनेक कृपा-दृष्टि ……………… !

नेताजी—अरे, की कहू ? ओना तँ देश भरिक सब नेता सब सँ मैत्री अछि, परन्तु एहन छोट-छीन काज लेल ककरा कहियौक ? हम जतबा बेर पटना जाइत छी ततबा बेर मुख्य मंत्री जीक सेक्रेटरी दौड़ले-हकासल अबैत अछि जे अपने कें भोजन टा तँ चीफ मिनिस्टरक संग करय पड़त। बड़ हेम-छेम अछि हुनका सँ। लेकिन अपने तँ बुझते छियैक जे बहाली मिनिस्टरक हाथ मे नहि रहैत छैक। ओहि ठाम तँ सर्वेसर्वा अफसरे, जकरा सभक लग रूपचन्द सब किछु…………

(तखनहि क्यो दरवाजा थपथपबैत छैक और हाँक दत छैक "मालिक, सरकार !")

युवक—आब हम अपनेक शरण मे आबि गेल छी। तखन……

[पुनः तेहने ध्वनि एवं हाँक]

नेताजी—अच्छा, तँ अहाँ दू मासक बाद भेंट करू।

युवक—(चौंकैत, अवाक् जेकाँ) दू मासक बाद ?

नेताजी—तँह ले। अरे, नौकरी कि चुटकी बजा कए होइत छैक ? धीरज चाही, धीरज।

[पुनः तेहने ध्वनि आ हाँक]

युवक—अच्छा, नमस्कार!

(नेताजी खाली हाथ जोड़ि कए नमस्कारक प्रत्युत्तर दैत छथि और दरवाजा दिसि देखि हाँक दैत छथि।)

नेताजी—के ? आबि कियैक ने होइत छहु ?

हरिया—(प्रवेश करैत) सलाम सरकार, सलाम !

नेताजी—(केवल एक हाथ सँ रुखाइ सँ सलामक जवाब दैत छथि) फेर ककर गर्दनि साफ कैलहीं ? एहि बेरक डाका मे कतेक सुतरलौक ?

हरिया—सरकार, अपनहि माय-बाप।

नेताजी—धुर् । हमरा पर कथी लेल पाप चढ़बैत छँ ?

हरिया—दोहाइ सरकार ।

नेताजी—बोल साफ-साफ । बात की छियौक ?

हरिया—सरकार एहि बेर टा बचा देल जाओ । (दुनू कान पकड़ि कए) फेर जौं कहियो एहन काज करी तँ अहीं हमरा दामुल द' देब, फाँसी द' देब ।

नेताजी—पहेली जुनि बुझा, साफ साफ कह ।

हरिया—सरकार ! (नजदीक जा कए कान मे आधा मिनट धरि फुसफुसाबैत छैक) ।

नेताजी—बाप रे बाप । तों डाका डालने घूर, खून पर खून करने चल और हम तोरा बचौने घुरियौक । तोरा सन-सन पापी कें जरूर दंड भेटबाक चाही ।

हरिया—(पैर सं लपटैत) दोहाइ सरकार ! दोहाइ माइ-बाप !

नेताजी—(झमारि कए पैर छोड़बैत) पापिष्ठ कहाँ के नहि तन !

[हरिया पुनः पैर पकड़बाक प्रयास करैत अछि, किन्तु ओ एक लात जमा दैत छथिन्ह] ।

हरिया—(कर जोड़ैत) दोहाइ भगवान् के !

नेताजी—हम कि ततेक पतित भ' गेल छी रे ? न्यायक मामला मे दखल देनिहारक सात पुश्त नरकमे जाइत छैक । हम कि तेहने नेता छी ? सत्यानाश भ' जाउक ओहन लोक सभक जे घूस-घास दए कोट-कचहरी कें भ्रष्ट करैत छथि । बज्जर गिरिहन्हु ओहन लोक सभक कपार पर जे अपन प्रभावें निरपराध कें फाँसी पर चढ़ा दैत छथि आ' दोषी कें छोड़ा दैत छथि । (हरिया दिस आँखि गुड़ारि कए डाँटैत) रे हरिया, सुन......

हरिया—जी सरकार !

नेताजी—निकल, बाहर निकल । एखन निकलि जो एहि ठाम सँ !

हरिया—(डाँड़ सँ पोटरी खोलैत टाकाक पुलन्दा सामने राखि) सरकार ! एतबा हम और देब। छुटि गेने एतबा हम और......।

नेताजी—पहिने जे छोड़ा देने छलियौक तकर बकियौता पाइ देनाइ तँ दूर, एको बेर चेहरो नहि देखौलें।

हरिया—हँ सरकार; ई कसूर भेलैक। हम ओहो नेने आएल छी।

नेताजी--रे, तों की बुझैत छैं जे टाका द' कए हमरा तों कीनि लेबें ?

हरिया—(स्वगत) ई बगुला भगत कहाँक नहि तन ! (प्रगट) नहि सरकार, अपने तँ एकरा दाने-पुण्य मे लगा देबैक। बरू आश्रमहि मे लगा देबैक। हम अपना लेल नहि कहैत छी। हमर बाल-बच्चा सब बिलटि जायत। (कलपैत) हमर डेरावाली परसूए सँ अन्न-पानि बारि पेटकुनियाँ देने पड़ल अछि।

नेताजी—(टेबुल पर राखल नोटक पुलिन्दा दिसि सतृष्ण-दृष्टिएँ देखैत और आवाज कें करुणा-द्रवित जेकाँ बनबैत) ऐं रे, तब कि साँचे तोहर डेरावाली अन्न-पानि बारि देने छौक ?

हरिया—हँ, सरकार ! मुह सूखि गेल छैक।

नेताजी—आ हा हा-हा हा ! रे, पेटकुनियों देने छौक ?

हरिया—जी सरकार, बपहारि काटि ओंघड़नियाँ मारि रहल अछि।

नेताजी—च-च-च-च ! भगवान् हमर हृदय एहन कियैक बनौलन्हि ? हम मातृ-जातिक पीड़ा सहिये नहि सकैत छी (किछु सोचि कए) अच्छा चल; लेकिन हरिया, ई आखिरी बेर हम तोरा मददि करबौक। आ हे, खरच-बरचक एहन-एहन मोकदमा मे कोनो ठेकान नहि रहैत छैक।

हरिया—हजूर, तत्काल पाँच हजार द' गेल छी और जे लागत से...

नेताजी—अच्छा, एखन जो। हमरा विचारय दे।

हरिया—बेस सरकार। अपने उठाइये लेलियैक तँ हमरा आब कोन चिन्ता ? (मोछ पर ताव दैत, अकड़ैत जा रहल अछि। दू डेग बढ़ला पर कनेक घुरि कए) हे, वैह टाका रहल। सलाम।

नेताजी—सलाम !

[किछु छन धरि बिजली आ' नेताजी दुदू एक बेर नोटक पुलिन्दा दिसि आ एक बेर परस्पर ताकि लैत छथि। तीन-चारि बेर इयेह क्रम चलैत अछि। फेर नेताजी पुलिन्दा उठा कए ड्राअर मे बन्द क' लैत छथि। किछु सोचि फेर ड्राअर खोलैत छथि और सौ टाकाक चारि टा नोट निकालि बिजली दिसि बढ़ा दैत छथिन्ह। बिजली बिहुँसैत सप्रेम निहारैत छन्हि। ओ ओकर गर मे हाथ दैत विभोर भ' जाइत छथि।]

बिजली—हम कतय मारल-मारल घुरैत छलहुं। आब किछु ठहार भेल।

नेताजी—अरे पाँच-छौ बरस पहिने हमरे की हालत छल ? किन्तु धन्य ई राज और धन्य हमर समाज-सेवाक पेशा ! (हठात् किछु स्मरण करैत और बिजली सँ फराक होइत) अच्छा, आइ सबेरे जे लड़की भर्त्ती भेल छल तकरा बजबय कहने छलहुँ ने ?

बिजली—बजवा पठौने छियैक। ओ अबिनहि दैत। (दरवाजा दिसि देखि कए) इयेह आबिये तँ गेल।

(कामिनीक प्रवेश। कातर एवं सलज्ज दृष्टिएं एक-एक बेर दुनू कें देखि ठाढ़ भ' जाइछ।)

नेताजी—की नाम थिक दाइ ?

कामिनी—(सलज्ज भाव सँ) कामिनी।

बिजली—कामिनी, ई आश्रमक संचालक छथि। हिनक हृदय बड़ कोमल छन्हि। हिनका सँ लाज वा भय जुनि करी। (कामिनी कनेक टा मुख उठा कए नेताजी दिसि देखैत अछि।) बैस जाउ। (कामिनी बैसैत अछि।)

नेताजी—दाइ, उदास जुनि हो। अहाँ कें आइये घर पठवा दैत छी।

कामिनी—(घबड़ाएल) घर ? ....ना.....ना.....मा !

(आवेश मे उठि कए ठाढ़ भ' जाइछ) हमरा कोनो घर नहि !

नेताजी—बेटी, प्रतिशोधक भाव नहि नीक। आखिर मायक स्नेह, बापक छाया......... !

कामिनी—(किछु चिन्तित भए) हमरा माइ-बाप क्यो नहि अछि। से रहने आइ........... !

नेताजी—मामा-मामी, सखी-बहिनपा, जिनका ओहि ठाम जैबाक विचार हो........... ।

कामिनी—कोइ नहि, कतहु नहि। एहि ठाम सँ बेला देने हम यमराजे टाक घर जा सकैत छी।

नेताजी—आह। शिव-शिव, शिव-शिव !! एहि उमिर मे ततय कियेक जायब ? लेकिन अहाँ सन सरल-हृदया, सुकुमारी तथा सुन्दरी कें बाहर मे कदम-कदम पर खतरा। नीक लोक आजकल अछिये कहाँ ?

कामिनी—हम सब सहब, लेकिन फेर समाज मे नहि जायब।

[कामिनी कें सब प्रकारें आश्रय-हीन जानि, नेताजीक हर्ष एवं साहस क्रमे-क्रमे बढ़य लागलन्हि। कुर्सी सँ उठि पास आबि कए ओकर माथ पर हाथ रखैत बाजैत छथि]

नेताजी—कोनो चिन्ता नहि। हमरा लग आबि आइ सँ अहाँ निश्चिन्त भ' गेल छी। (एतबा कहैत ओ कामिनीक माथक केश पर हाथ फेरय लगैत छथि। पुनः बाँहि पर और पीठपर स्नेह सँ हाथ फेरैत छथि। आ' कामिनी ततबे कठुआएल जाइछ। नेताजी दुनू बाँहि पकड़ि कए ओकरा कुर्सी पर बैसा दैत छथि और अपनहुँ बगलक कुर्सी पर बैस जाइत छथि। तखनहि दरवाजा कें खटखटाबैक ध्वनिक संगहि "नेताजी हैं अठे" क आवाज सुनल जाइछ।)

बिजली—बूझि पड़ैत अछि, सेठ छगनमल जी आएल छथि।

[नेताजी एक बेर चारू कात सतर्क दृष्टि-निक्षेप करैत बिजलीक आगाँ सँ टाका सब समेटैत छथि।]

बिजली—(क्रुद्ध, किन्तु दबल आवाज मे) अरे, हट्! (कहि हाथ पकड़ि लैत छन्हि।)

नेताजी—अरे, एहि चंडाल-चौकड़ी सँ नुकबे दीयह ने। अलगे कए राखि दैत छी। बाद मे ल' लेब। (हाथ छोड़ा लैत छथि। टाका ड्रावर मे राखैत) आओल जाउ सेठजी।

छगनमलजी—(प्रवेश करैत) राम-राम बाबूजी, रामराम।

नेताजी—राम-राम सेठ जी।

[अबैत मात्र छगनमल जी एक दिसक चश्मा कें ऊपर घसका कए विचित्र जेकाँ कामिनी कें देखैत छथि।]

छगनमल जी—(बिजली दिसि नजर पड़ला उत्तर) नमस्कार देवीजी।

बिजली—नमस्कार।

नेताजी—कुशल तँ अछि ने सेठ जी ?

छगनमलजी –(कामिनी दिसि देखैत नेता जी सँ बात क' रहल छथि) कुशल-मंगल सब चोखो; और थारो ?

[सेठ जी कें जेना कामिनीक अस्तित्व पर सन्देह भ' जाइत छन्हि। ओ पूरा चश्मा हटा कए ओकरा निहारैत छथि। फेर आँखि मलि कए देखबाक प्रयास करैत छथि जे कतहु हम स्वप्न तँ नहि देख रहल छी। तत्पश्चात् गृद्ध दृष्टिएँ देखैत छथि...जेना नेताजीक कोनो कथा दिस ध्याने नहि द' रहल होथि।]

नेताजी—हमर कुशल तँ अपने लोकनिक हाथ मे अछि। बुझलियैक नहि ? एहि बेर चुनाव लड़बाक विचार अछि।

छगनमलजी—कृपा करे भगवान्! (कामिनी दिसि पुनः देखैत) सोवणी !

नेताजी—एहि बेर देखल जाय एक चांस।

छगनमल जी—छी-छी-छी ! डांस वांस मे के पिसा होस्सी ?

नेताजी—अरे, डांस नहि सेठ जी, चांस।

छगनमल जी--हाँ, चांस ? चांस चोखो।

नेताजी— कहल जाउ, कोन काजे आएल गेलैक ?

छगनमल जी— यों ई मिलणे चल्यो आयो। (कामिनी दिसि देखि कए) नेताजी, छोकड़ी तो चोखो।

नेताजी— हूँ। कामिनी दाइ, जाउ। अहाँ आरम करू गे।

[कामिनी धीरे-धीरे जाइछ और सेठ टकटकी लगा कए मंत्र-मुग्ध जेकाँ देखैत छथि।]

छगनमल जी—या तो म्हाराणी बणने जोग है।

नेताजी--हूँ।

छगनमल जी – अठे तो इने साग रोटी देसी। इने तो माल-पूआ चाई।

नेताजी—हूँ। तँ माल-पूआक लेल अपनेक घर मे पठा दी ! सेह ने ······ ?

छगनमल जी—-बा बा, के लाख टके की बात कई है !

[नेताजी क कानमें आधा मिनट धरि फुसफुसावैत छथि।]

नेताजी---(मुख-मुद्रा प्रसन्न भ' जाइत छन्हि, किन्तु बाद मे कृत्रिम क्रोध सँ बजैत छथि।) बस करू, बस करू।

छगनमल जी---अरे, पिस्सा देस्यूँ यार।

नेताजी---(सेठ जीक कान मे ई आ' हिनक कान मे सेठजी किछ् कहैत छथि।) नहिं-नहिं, कम नहिं।

छगनमल जी---अच्छा तो चार हजार। बस।

नेताजी --- ना-ना, दस सँ एक पाइ कम नहि।

छगनमल जी-–अच्छा तो पाँच हजार, बस। बात नकी।

नेताजी---नहि, अहाँक खातिर आठ हजार। एहि सँ एक पैसा कम नहि।

बिजली—एहन सुन्नरि लड़की तँ हम आइ धरि नहि देखने छलियैक।

नेताजी—एहन लड़की कतय भेटतन्हि ?

छगनमल जी—अरे, घणी मिल्लै।

नेताजी—तखन सौदा नहि पटत।

छगनमल जी—तो जाऊँ। कमती कोनी होस्सी ?

नेताजी—[किछु उदास भए] अच्छा तँ सात हजार।

छगनमल जी—अच्छा तो छै हजार।

नेताजी—[कठोर स्वर मे] नहि !

छगनमल जी—[जोर सँ] नहि ?

नेताजी—नहि !

छगनमल जी—[जोर सँ] नहि ?

नेताजी—नहिं, नहिं, नहिं !

छगनमल जी—अच्छा तो यार, सात ई सही। तो बात नक्की।

नेताजी—नक्की।

छगनमल जी—नक्की ?

नेताजी—[जोर सँ आकुत भए] नक्की।

छगनमल जी—अच्छा, तो काल ले जास्यूँ। जय रामजी !

[तेजी सँ प्रस्थान करैत अछि।]

बिजली—(लग आबि एवं हाथ बढ़ा कए) दियह हमर टाका। निकालू।

नेताजी—केहन टाका ?

बिजली—वाह रे, केहन टाका ? चलू-चलू। हँसी हमरा नीक नहि लगैछ।

नेताजी—[कड़ा स्वरें] किछु नहि भेंटत। बेसी टाका एक साथ औने माथा घुरि जायत। आ' हे, एहने मे हार्टो फेल करि जाइत छैक।

बिजली—तकर अहाँ कें कोन चिन्ता ?

नेताजी—चिन्ता अवश्ये कि! जाउ, बेसी लोभ जुनि करी। दरमाहा पाबैत छी आ' सुख-सम्मान सँ रहैत छी, इयेह बहुत।

बिजली—नहि देब ?

नेताजी—नहि, नहि, नहि। एकदम नहि।

बिजली—तँ हम साथ छोड़ि देब।

नेताजी—एक बिजली छोड़तीह तँ हजार बिजली ऐतीह।

बिजली—[क्रोध सँ] लुबा कहाँ क नहि तन !

नेताजी—हे, लुबा-टुबा कहलहुँ तँ छाउर लगा कए जीभ सट्ट द' खींचि लेब।

बिजली—सब भंडाफोड क' देब।

नेताजी—अहीं कें ने जेल पठवैत छी। रोहिणीक ई हालत कियैक करबौलियैक ? कोन-कोन पुरुष कें आश्रम मे आबय दैत छियैक ? दुश्चरित्रा नहि तन ?

बिजली—बाप रौ बाप! फरेब; दगाबाज। रोहिणिये अहाँक पापक भंडाफोड़ करत। अपनहि मुंहे।

नेताजी—एहि सँ कम्महि टाका सँ रोहिणीक मुंह बन्द भ' जेतैक। टाका ……… टाका ………… टाका चाही। [जोर सँ] रोहिणी कें कीनि लेब। [और जोर सँ] कीनि लेब रोहिणी कें। हा ! हा ! हा ! हा !

[दरवाजा धड़ाम सँ खोलैत, पागल जकाँ रोहिणीक प्रवेश। फुजल छितरायल, रूक्ख केश, आँखि चढ़ल; हाथ मे फराठा अथवा बाढ़नि नेने कलपैत एवं क्रोधित]

रोहिणी—कीनि लेब रोहिणी कें ! [बाढ़नि मारैत] गुण्डा, लबार, धरकट ! ले, ले, ले ! [तड़ातड़ि बाढ़नि पड़ि रहल छैक] हम तँ मरबे करब, परन्तु ई नहि बुझिहें जे हम एकसरे जायब। हम सब कें ल' कए मरब।

नेताजी—अरे, रोहिणी, खबरदार !

रोहिणी—आबि रहल छैतौक तोहर लकड़दादा पुलिस । सब लिखि कए हम पठा देने छियौक । नेता, समाज-सेवी । इह !

[नेताजी झाड़ू पकड़ि लैत छथि]

बिजली—[लग आबि] दे कुंजी । निकाल हमर टाका ।

नेताजी---बिजली, रोहिणी, मारि बेंत हम सभक खलड़ी ओदारि देब आइ । खलड़ी ओदारि देब ।

[तखनहि केवाड़ पर धड़ाम-धड़ाम आवाज होइत अछि । दरवाजा कें जोर सं धकेलने तीन पुलिस कर्मचारीक प्रवेश । नेताजी अवाक् । पहिने नुकबैक, फेर भागैक प्रयास । पुलिस बढ़ि कए गट्टा पकड़ि लैछ । दोसर पुलिस हथकड़ी लए आगां बढ़ैछ । बिजली क्रूर अट्टहास करैछ । किन्तु तेसर पुलिस डंटा नेने ओकरे दिस जखन बढ़ैछ तखन ओ चीत्कार करि उठैछ । एही बीच नेताजीक एक हाथ मे हथकड़ी देल जा चुकल अछि और दोसर हाथ दिसि बढ़ाओल जा रहल अछि कि तखनहि···]

यवनिका-पात